

पाठ - 4 सूरज और सुरगा

① 'सूरज और सुरगा' कविता लिखिए

कई बार हमने देखा है

सुरगा बाँगा लगाता जब

पूरब से सुसकाता सूरज

धीरे - धीरे आता तब ।

इसी बात से लगा सोचने -

सूरज की लाता हूँ मैं

बाँगा लगाकर रोज सुबह

इस सूरज की चसकाता मैं ।

और बात फिर सीची उसने
कल सीऊंगा मैं जी भरकर
बाँगा नहीं मैं दूँगा तड़के
सूरज आरगा क्यों कर ?

सुरगा सोया गहरी नींद
सूरज आया ठीक समय
रँगा - रँगीले फूल खिल गए
गूँज उठी चिड़ियों की लय।
- श्रीप्रसाद

कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए :-

सुरगा सोया बाहरी नींद

सूरज आया ठीक समय

रंग - रंगीले फूल खिल गए

बूँज उठी चिड़ियों की लय ।

'सूरज' का चित्र बनाकर उसमें

रंग भरिए :-